मछली-मछली! कितना पानी!

हेलन, हिंदी : विदूषक

मछली-मछली!

कितना पानी!

हेलन, हिंदी : विदूषक

“यह छोटी मछली,”
मैंने मिस्टर कार्प से कहा,
“मुझे वो पसंद है.
मुझे वो चाहिए.
वो भी मुझे पसंद करती है.
मैं उसे ओटो बुलाऊंगा.”

फिर मिस्टर कार्प ने मुझे बताया:
“जब तुम मछली को खाना दो,
तो कभी भी बहुत ज्यादा मत देना.
बस इतना सा, और ज्यादा नहीं!
एक चुटकी से ज्यादा कभी नहीं,
नहीं तो पता नहीं
क्या गड़बड़ हो जाए!.”

“बहुत अच्छा,” मिस्टर कार्प ने कहा.
“मैं तुम्हें उसे खाना खिलाने का
तरीका बताऊँगा.”

पर चुटकी भर खाने से
ओटो का पेट नहीं भरा.
उसने और खाना माँगा.
भूखी ओटो को और
खाना चाहिए था.
नहीं तो भला उसका
पेट कैसे भरता!

फिर मैं ओटो को घर ले गया.
मैंने उसे कुछ खाना दिया.
मिस्टर कार्प के बताए अनुसार
मैंने उसे सिर्फ
एक चुटकी खाना दिया.

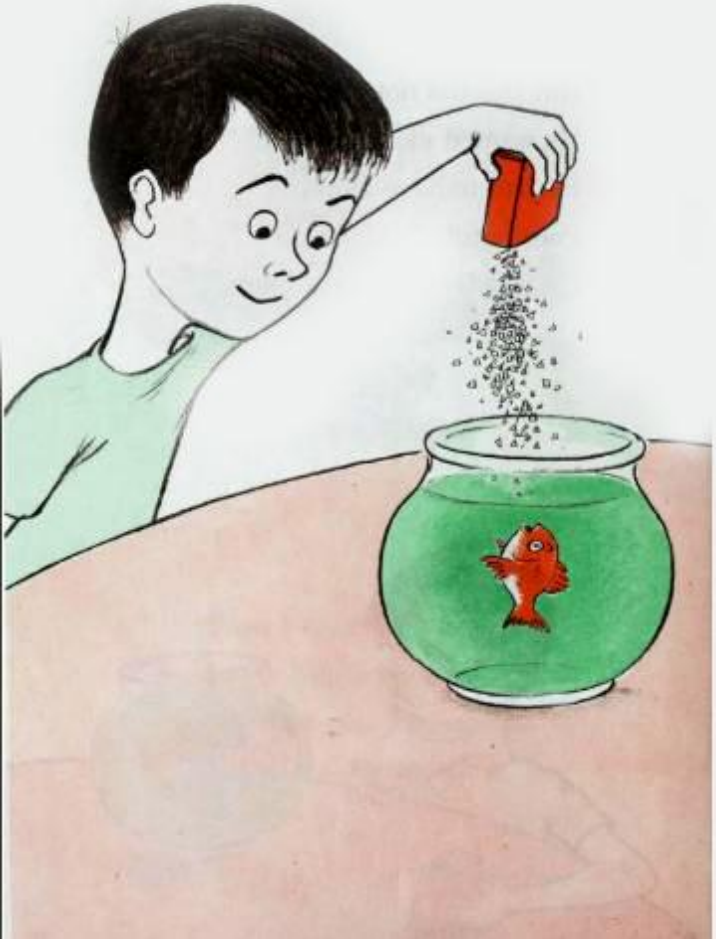

मुझे मिस्टर कार्प की बात याद थी:
“जब तुम मछली को खाना दो,
तो कभी भी बहुत ज्यादा मत देना.
बस इतना सा, और ज्यादा नहीं!
एक चुटकी से ज्यादा कभी नहीं,
नहीं तो पता नहीं, क्या गड़बड़ हो जाए!.”
पर मैंने ओटो को पूरा-का-पूरा
डिब्बा खाने को दे दिया.

फिर वाकई में कुछ हुआ.
ओटो सच में बढ़ने लगी.
मैंने उसे बढ़ते हुए देखा.
वो बस बढ़ती ही गई.
जल्द ही वो कांच का मर्तबान
ओटो के लिए छोटा पड़ गया.

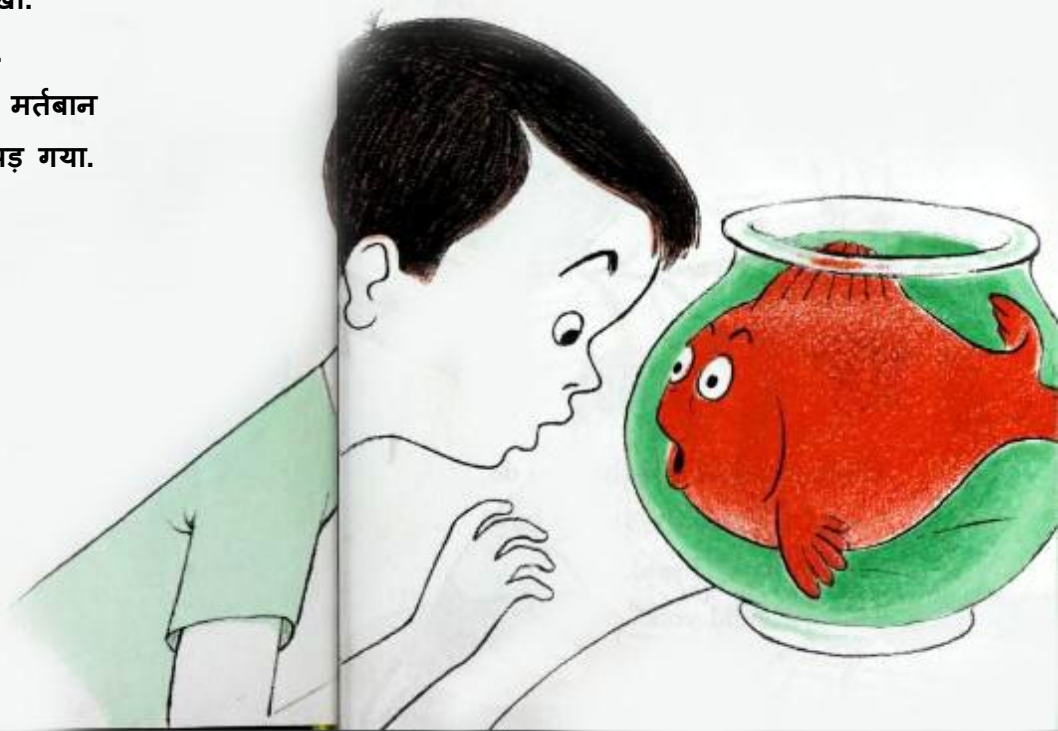

मैं क्या करता.
मैंने ओटो को
कांच के फूलदान में रखा.
मैंने कहा, “ओटो, यह फूलदान
तुम्हारे लिए ठीक रहेगा.”

पर वैसा नहीं हुआ.
ओटो बढ़ती ही गई.
जल्द ही फूलदान भी
उसके लिए छोटा पड़ गया.
यह कोई हंसी की बात नहीं थी.
क्योंकि जल्द ही ओटो की सिर्फ
पूँछ ही फूलदान के बाहर थी.

मैंने फूलदान को पकड़ा
और मैं उसके साथ दौड़ा.
“ओटो,” मैंने कहा,
“मुझे पता है कि मैं तुम्हें कहाँ रखूँ.
वो जगह तुम्हारे लिए बिल्कुल ठीक होगी.”

फिर मैंने ओटो को
एक बड़े भगोने में रखा.
पर वो भी ओटो के लिए छोटा पड़ा.
क्योंकि, ओटो लगातार बढ़ रही थी.
जल्द ही वो भगोना भी
उसके लिए छोटा पड़ा.

फिर मैंने उस छोटे बर्तन से उसे
दूसरे बड़े बर्तन में रखा.
पर उसका शरीर
बहुत तेज़ी से बढ़ रहा था.
बेचारी छोटी मछली!
मैंने, उसे इतना खाने को क्यों दिया?

"ओटो," मैंने कहा,
"मुझ पर दया करो! कृपा बढ़ना बंद करो!"
पर ओटो ने बढ़ना बंद नहीं करा.
वो लगातार बढ़ती ही रही.
जल्दी ही घर में उसके नाप का
कोई बर्तन ही नहीं बचा!

ओटो को पानी तो ज़रूर चाहिए.
अब मैं बस एक काम कर सकता था.
वो मैंने किया भी.
मैंने ओटो को
पूँछ पकड़कर उठाया.

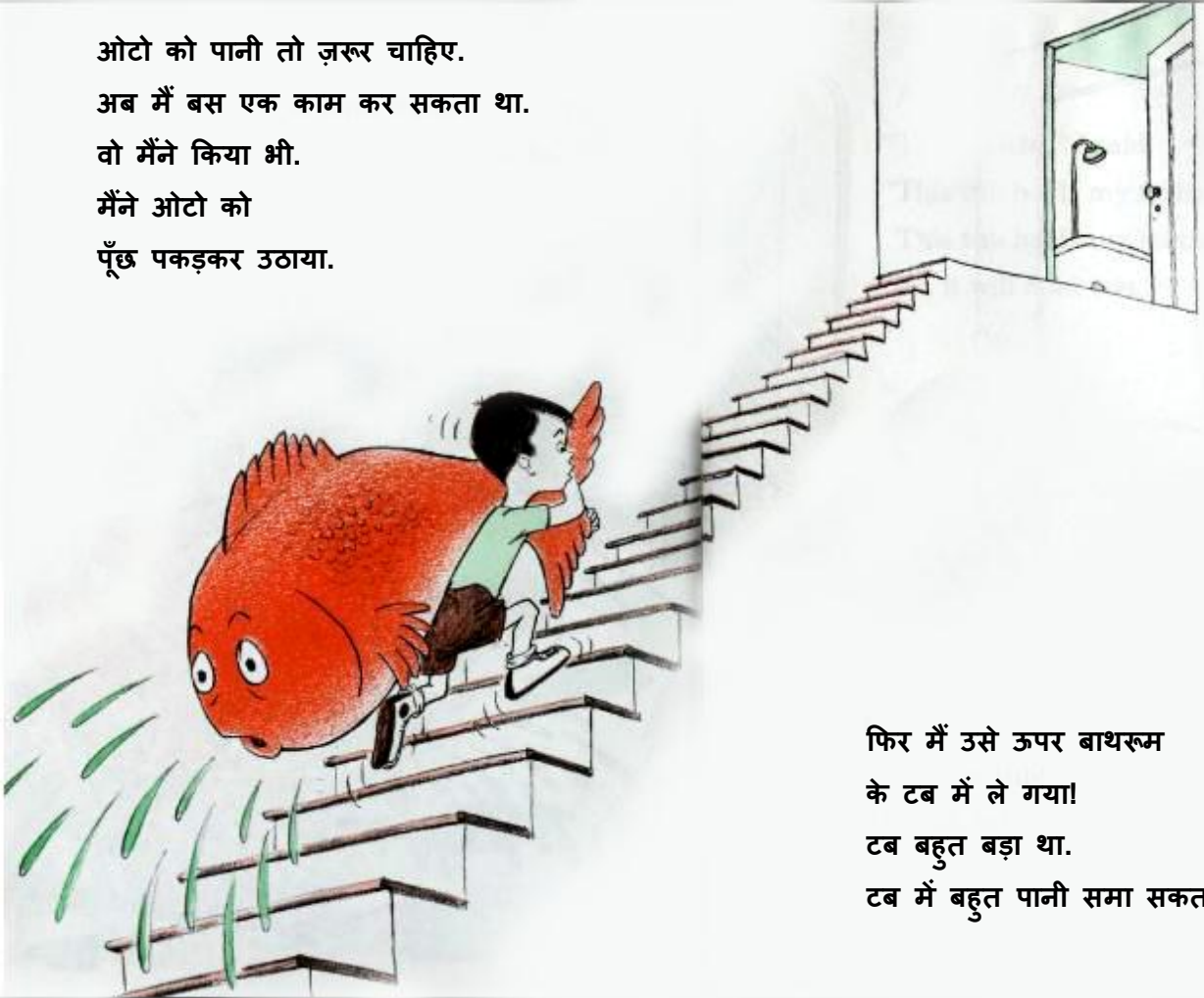

फिर मैं उसे ऊपर बाथरूम
के टब में ले गया!
टब बहुत बड़ा था.
टब में बहुत पानी समा सकता था.

चलो आखिर!
“देखो ओटो,” मैंने कहा.
“इस टब में पिताजी नहाते हैं.
इस टब में माँ नहाती हैं.
यह तुम्हारे लिए काफी बड़ा होगा.”

पर तब तक ओटो और बढ़ गई थी.
अब वो टब में भी नहीं समा पा रही थी.
ओटो बस बढ़ती ही जा रही थी.
“अरे ओटो!” मैंने कहा,
“अब भला मैं क्या करूं?”

फिर धम्म! की आवाज़ हुई!
दरवाज़ा टूटा.
धम्म!
ओटो फिसलता हुई नीचे गई.
मैं भी उसके साथ-साथ नीचे गया.
हम सीढ़ियों पर बहुत तेज़ी से फिसले!

बाथरूम का सारा पानी
तहखाने में भर गया.
पानी के साथ ओटो भी वहां गई.
अब मुझे कुछ जल्दी ही करना होगा.
मैंने झट से फोन उठाया.

मैंने पुलिस थाने में फोन किया.
"मदद! मदद करें!" मैंने कहा.
"मैंने अपनी मछली को
कुछ ज्यादा ही खिला दिया.
मिस्टर कार्प ने
ज्यादा खिलाने को मना किया था.
पर मुझ से गल्ती हो गई!"

"क्या?" पुलिसमैन ने कहा.
"मिस्टर कार्प के मना करने के
बाद भी तुमने वो किया?
यह तो तुमने बहुत बड़ी गल्ती की!
मैं तुरंत वहां पहुँचता हूँ!"

पुलिसमैन जल्दी ही आया.
“मेरी मछली उस दिशा में गई है,” मैंने कहा.
“वो नीचे तहखाने में गई है.”

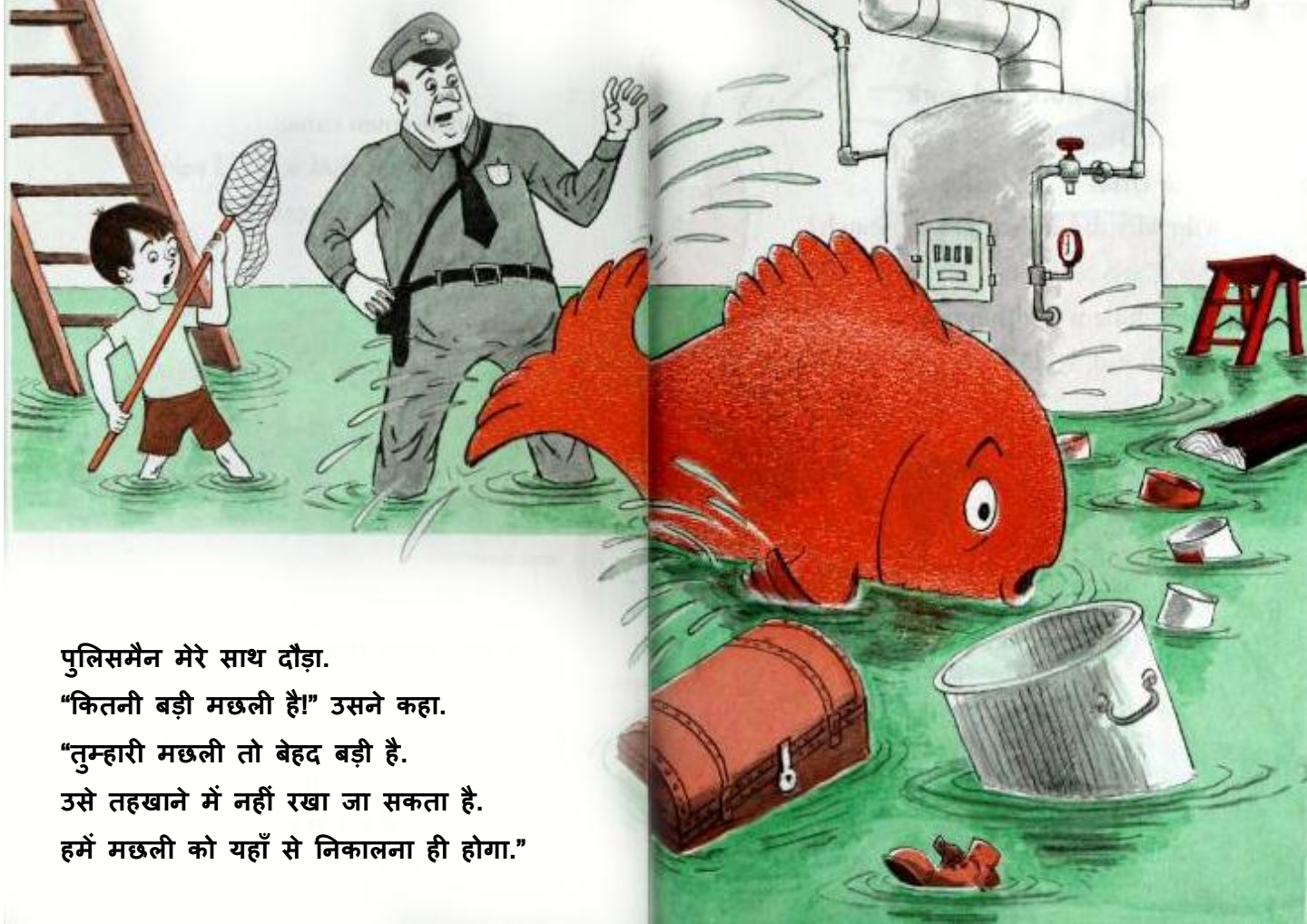

पुलिसमैन मेरे साथ दौड़ा.
“कितनी बड़ी मछली है!” उसने कहा.
“तुम्हारी मछली तो बेहद बड़ी है.
उसे तहखाने में नहीं रखा जा सकता है.
हमें मछली को यहाँ से निकालना ही होगा.”

हमें ओटो को तहखाने से
निकालने में बड़ी मशक्कत करनी पड़ी.
बेचारी ओटो!
मैंने उसे इतना खाना क्यों खिलाया?
मिस्टर कार्प ने
मुझे पहले ही सचेत किया था.
उन्होंने कहा था कि कुछ ज़रूर होगा.
अब वो वाकई में हो रहा था!

बड़ी मुश्किल तमाम हमने ओटो को
तहखाने में से बाहर निकाला.
पर अब ओटो पानी से बाहर थी.
उसे पानी की सख्त ज़रुरत थी!

“मछली को पानी ज़रूर चाहिए,”
मैंने पुलिसमैन से कहा.
“हमें उसे पानी के पास ले जाना चाहिए.
मैं रेडियो पर और मदद मंगाता हूँ.”

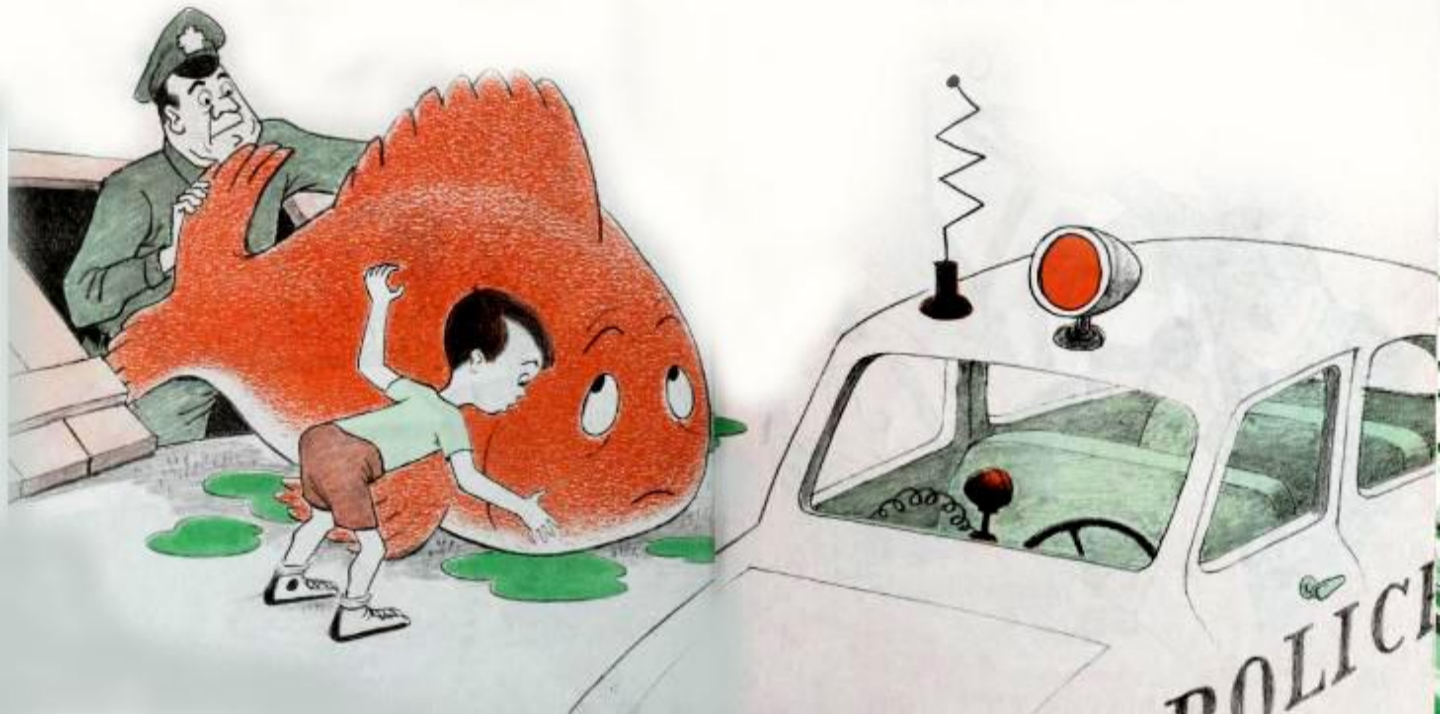

पुलिसमैन ने रेडियो पर
फायरब्रिगेड से संपर्क किया.
“जल्दी आओ! मदद के लिए!” उसने कहा.
“एक लड़के ने मछली को बहुत खिला दिया है!”

“अच्छा! लड़के ने मछली को बहुत खिलाया है?
हम अभी वहां पहुँचते हैं.”

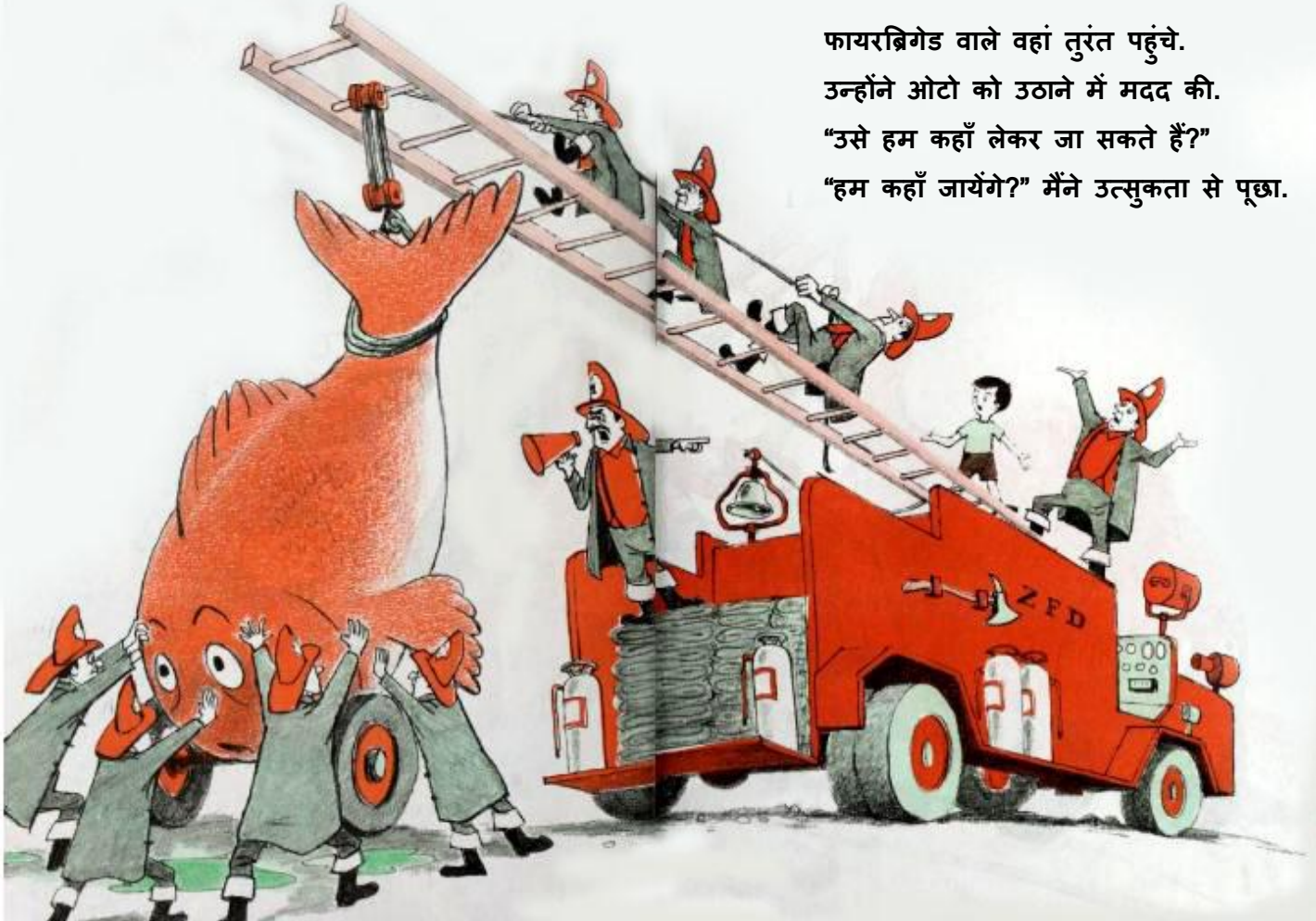

फायरब्रिगेड वाले वहां तुरंत पहुंचे.
उन्होंने ओटो को उठाने में मदद की.
“उसे हम कहाँ लेकर जा सकते हैं?”
“हम कहाँ जायेंगे?” मैंने उत्सुकता से पूछा.

“हम उसे स्विमिंग-पूल में ले जायेंगे!”
फायरब्रिगेड वाले चिल्लाए.

“अच्छा स्विमिंग-पूल!” मैं चिल्लाया.
“कृपाकर जल्दी करें!”

फायरब्रिगेड के लोग ओटो को उठाकर
जल्दी से स्विमिंग-पूल पहुंचे.
वहां फायरब्रिगेड वाले चिल्लाए,
“सब लोग स्विमिंग-पूल में से
तुरंत बाहर निकलें!
अब स्विमिंग-पूल में यह मछली रहेगी.”

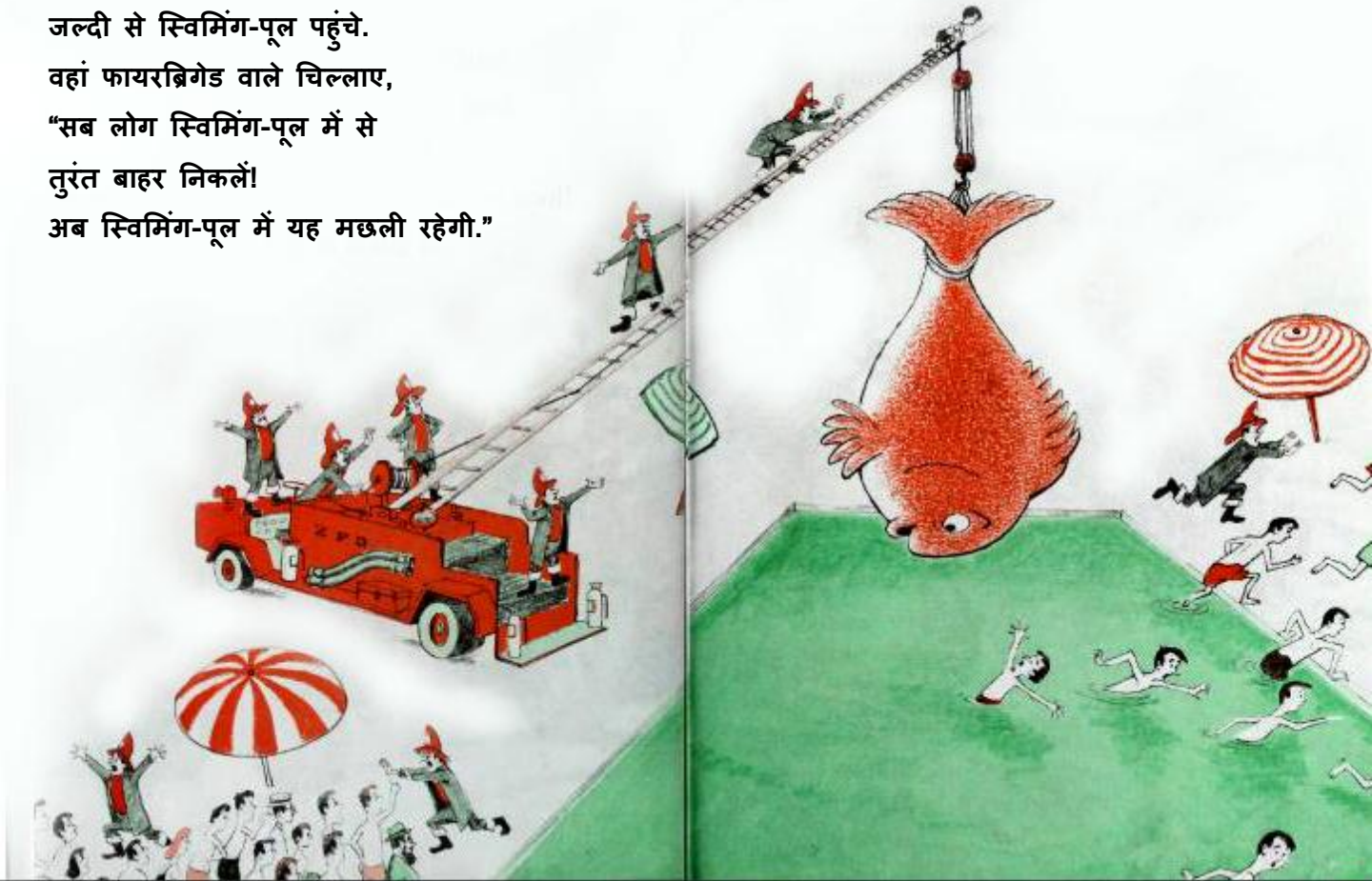

फिर ओटो को स्विमिंग-पूल
में डाला गया.
एक बड़े छपाके से ओटो
स्विमिंग-पूल में जा गिरी!

अब मैं खुश था.
अब मेरी ओटो ढेर पानी में तैर सकती थी.
स्विमिंग-पूल, ओटो के लिए
सबसे अच्छी जगह थी.
ओटो उसमें दिल भरकर तैर सकती थी.

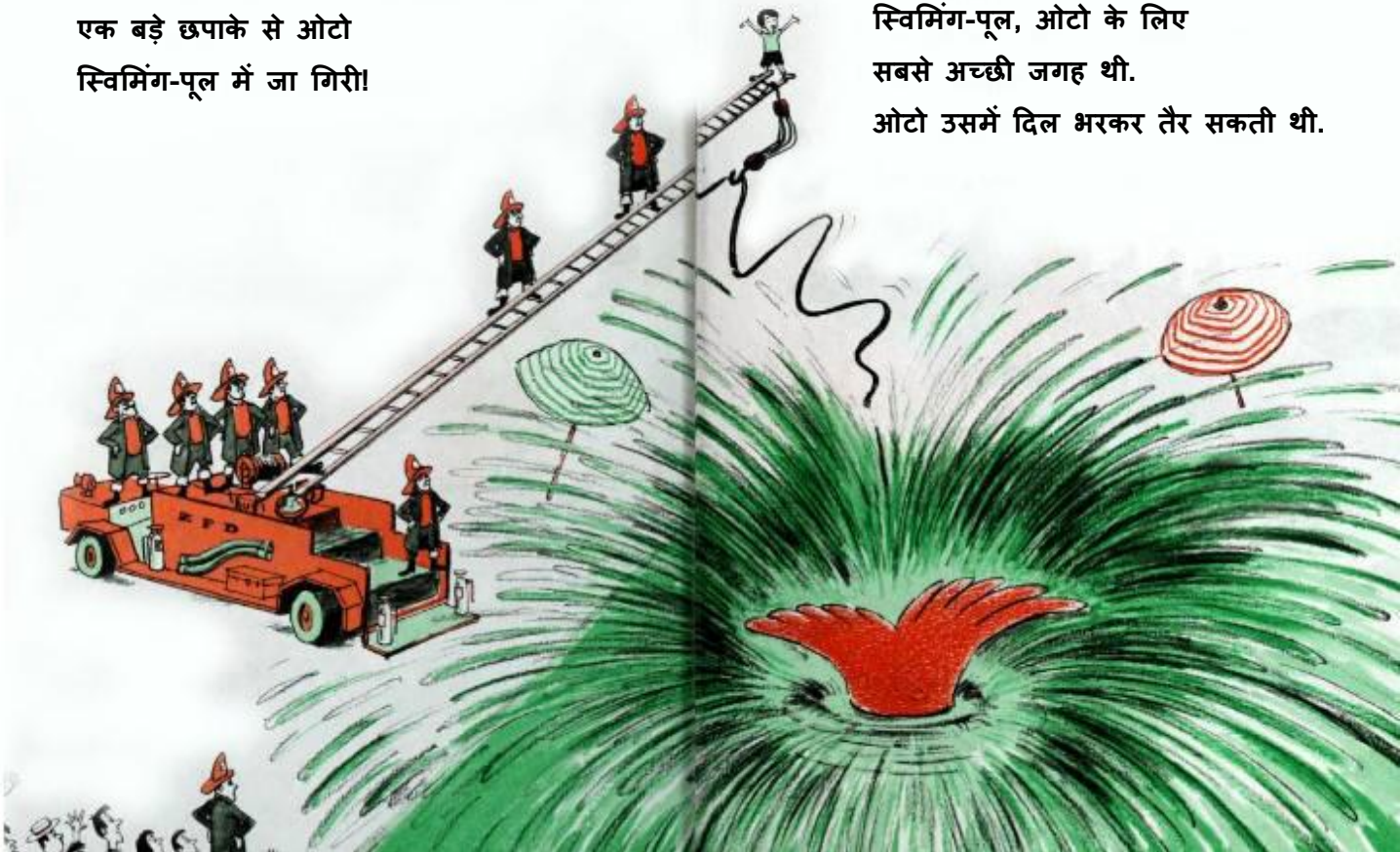

पर ओटो!
उसका आकार तो बढ़ता ही गया.
वैसे भी स्विमिंग-पूल में
ओटो को कोई नहीं चाहता था.
“मछली को तुरंत बाहर निकालो!”
तैरने वाले चिल्लाए.

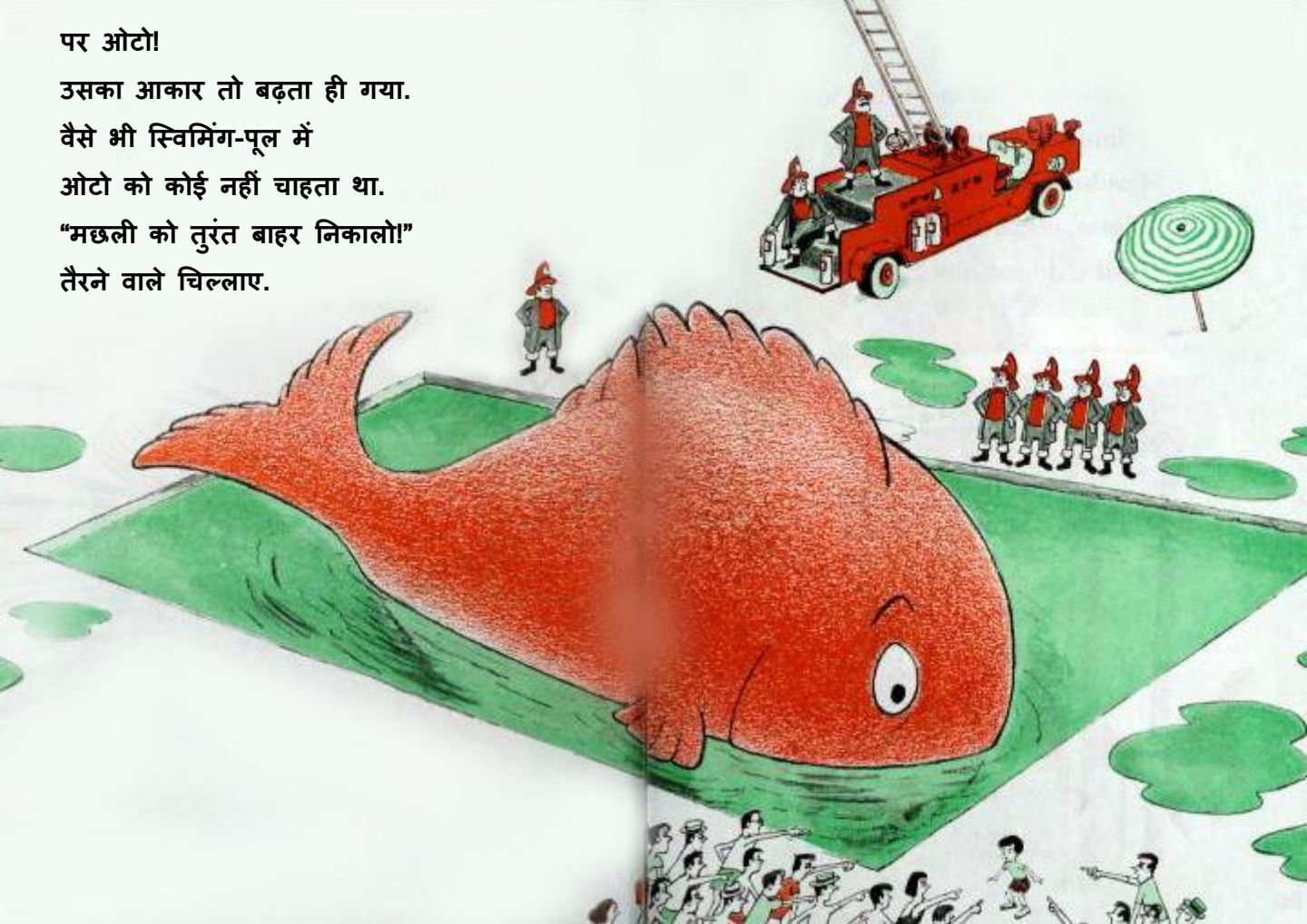

अब सिर्फ एक काम करने को बाकी बचा था.
मैंने वो किया.
मैंने तुरंत मिस्टर कार्प को फोन किया.
“कृपाकर मेरी मदद करें!” मैंने रोते हुए कहा.
“मैंने ओटो को कुछ ज़्यादा ही खिला दिया.”

“यह तुमने क्या किया!” मिस्टर कार्प ने कहा.
“तो तुमने उसे बहुत ज्यादा खिला दिया!
मुझे यह पहले से ही पता था.
“मैं जिस काम को मना करता हूँ.
तुम जैसे शैतान लड़के वो ज़रूर करते हैं.
चलो, मैं अभी वहां पहुँचता हूँ.”

फिर मिस्टर कार्प वहां आए.
उनके हाथ में एक काला डिब्बा था.
उनके पास और भी कई चीज़ें थीं.

“अब आप क्या करेंगे, मिस्टर कार्प?”
मैंने उनसे पूछा.
मिस्टर कार्प ने कुछ जवाब नहीं दिया.
वो सीधे स्विमिंग-पूल के पास गए.

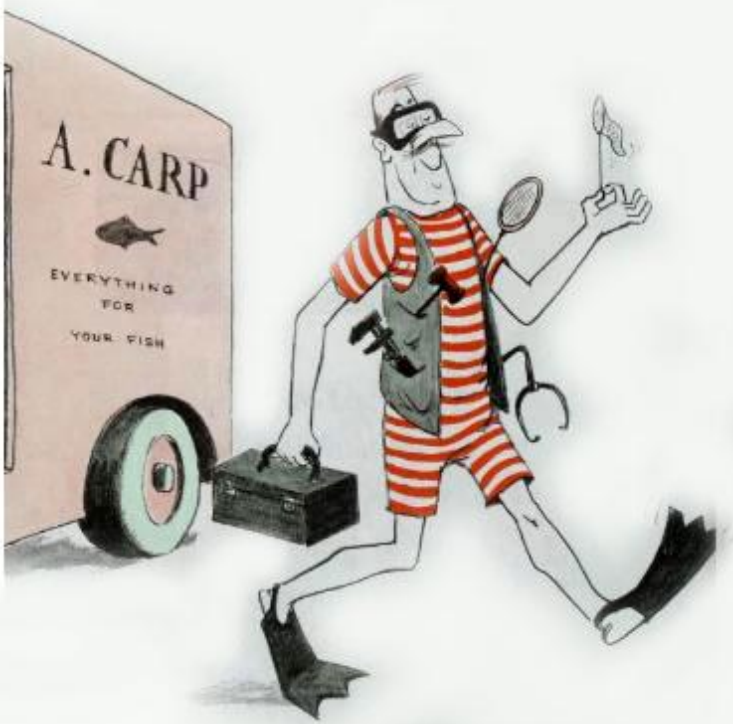

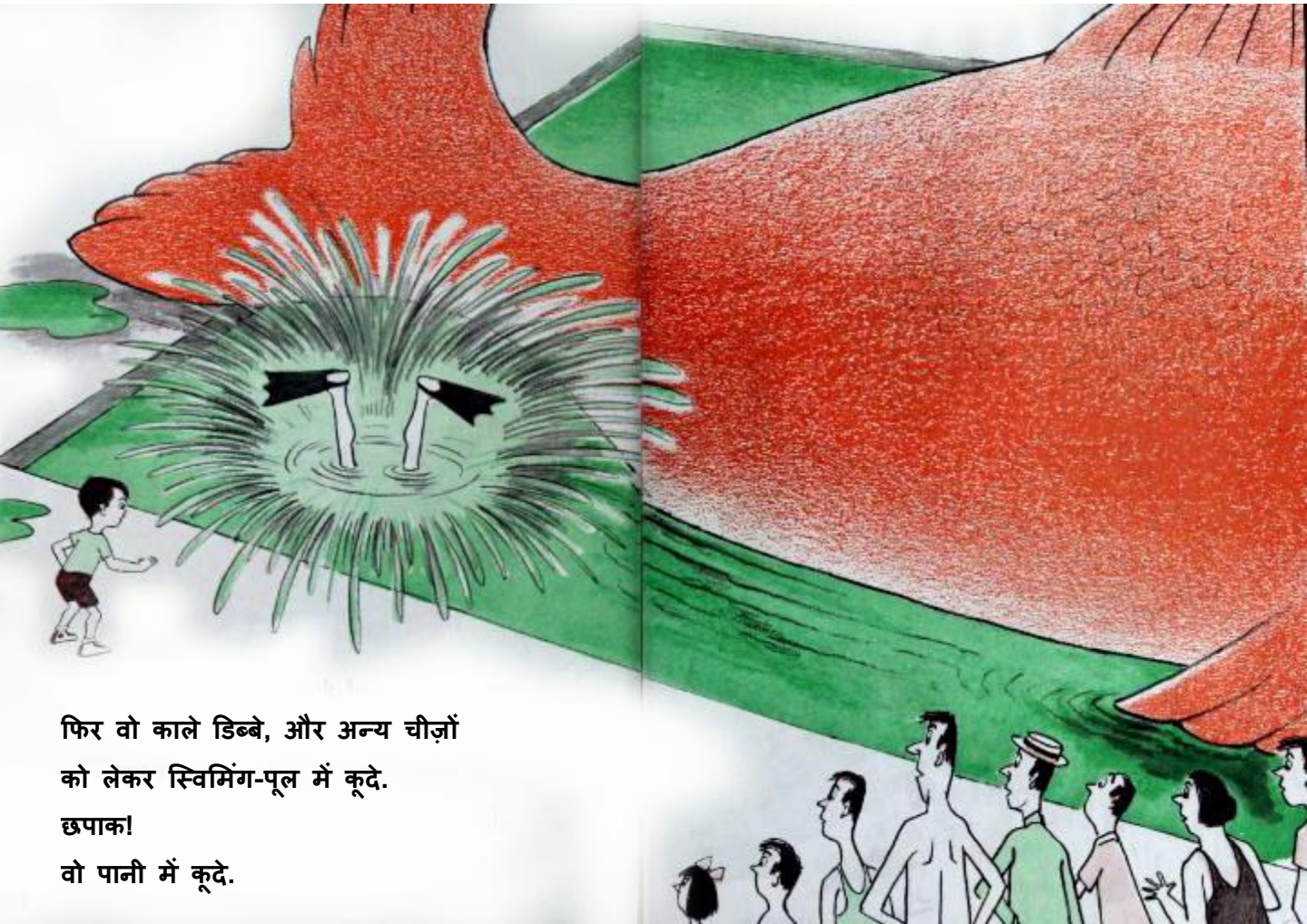

फिर वो काले डिब्बे, और अन्य चीज़ों
को लेकर स्विमिंग-पूल में कूदे.
छपाक!
वो पानी में कूदे.

छपाक!

ओटो ने भी पानी में डुबकी लगाई!

अब मुझे ऊपर से सिर्फ उसकी पूँछ दिख रही थी.

मिस्टर कार्प मुझे बिल्कुल दिखाई ही नहीं दिए.

पानी में नीचे क्या चल रहा था?

वो दोनों पानी में नीचे क्या कर रहे थे?

काफी देर तक मुझे कुछ नहीं दिखा.
ओटो भी नहीं.
मिस्टर कार्प भी नहीं.
कुछ भी नहीं.
क्या मुझे मेरी प्रिय मछली दुबारा दिखेगी?
क्या मिस्टर कार्प मुझे दुबारा दिखेंगे?

मिस्टर कार्प! मिस्टर कार्प! मैं चिल्लाया.
"आप अन्दर क्या कर रहे हैं?
आप ठीक-ठाक तो हैं?"

बस तभी मिस्टर कार्प पानी से बाहर निकले.
उनके हाथ में मछली रखने वाला
कांच का एक छोटा मर्तबान था.
उस मर्तबान में मेरी प्रिय ओटो तैर रही थी!
मिस्टर कार्प ने उसे फिर से छोटा बना दिया था.
“यह मैंने कैसे किया,
वो तुम मुझसे मत पूछो,” उन्होंने कहा.
“यह लो अपनी मछली.”

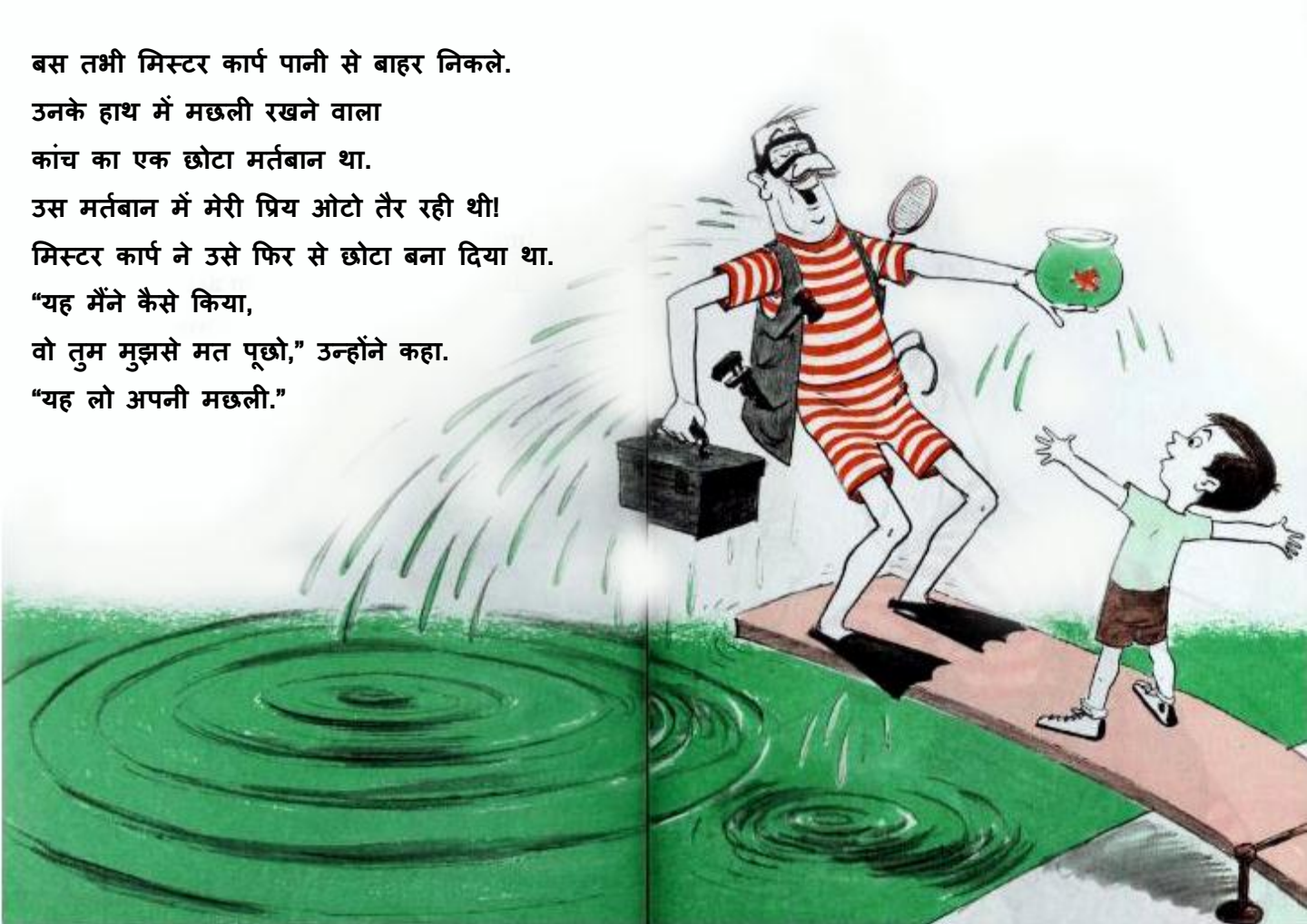

मिस्टर कार्प ने कहा:
“आगे से उसे कभी भी
बहुत ज्यादा मत खिलाना
बस इतना सा, एक चुटकी भर!”

अब मैं बिल्कुल वही करता हूँ
जैसा मिस्टर कार्प ने बताया था.
मैं मछली को सिर्फ एक चुटकी खाना देता हूँ.
नहीं तो मालूम नहीं क्या हो जाए!

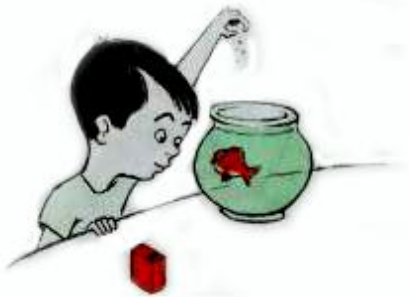

नहीं तो क्या होगा – यह अब मुझे पता है!